

ईश्वरीय ज्ञान, दिव्यगुणों और परमात्म शक्तियों से हमारी आत्माओं को भरपूर करने वाले, ज्ञानसागर - दिव्यगुणों के सागर - सर्वशक्तिमान बाप ने कहा - मीठे बच्चे - बाबा से ही सर्व दिव्यगुण आत्मा में भरने हैं फिर इन लक्ष्मी-नारायण से भी देवी-गुण लेने हैं.

हमारा बाबा, ज्ञान का सागर, दिव्यगुणों का सागर और सर्वशक्तिमान हैं. उन्हें ज्ञानसागर का टाइटल मिलता है क्योंकि उन्हें सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान है. उन्हें ही दिव्यगुणों का सागर भी कहा जाता है क्योंकि उन-में आत्मा के ऑरिजिनल दिव्यगुणों का भंडार है. वैसे ही उन-में परमात्म शक्तियों का भी भंडार है इसलिए उनको सर्वशक्तिमान कहा जाता है. बाबा से हम योग में यही दिव्यगुणों और आत्मिक शक्तियों को हमारे में भरते हैं जिसे आत्मा देवी-गुण धारण करने लायक यहाँ बनती हैं.

पहले समझे के क्या हैं आत्मा के ऑरिजिनल दिव्यगुण, देवी गुण और आसुरी गुण.

आत्मा के ऑरिजिनल दिव्यगुण -- ज्ञान, पवित्रता, शांति, सुख, आनंद, प्रेम और शक्ति.

आत्मा के देवी गुण -- संतुष्टता, धैर्यता, रमणिकता, नियमितता, सत्यता अथवा प्रमाणिकता, हिम्मत, मृदुलता, परोपकारिता, माफी लेना और माफ करना...और भी बहुत हैं.

आत्मा के आसुरी गुण -- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, में-मेरा पन, ज्यादा जोर से बोलना, किसको दुखी होते देख खुश होना...लिस्ट लंबा है.

आज की मुरली में बाबा ने हमें आत्मा के सभी ऑरिजिनल दिव्यगुणों में से शांति के गुण को सबसे भारी कहा है क्योंकि उसे ही हम आत्मा में रहें क्रोध के आसुरी गुण पर विजय पा सकते हैं.

शांति के गुण को धारण करने के लिए बाबा ने कहे महा-वाक्यों को बाबा की याद में रहकर रिपिट करेंगे.

- बाप को कहा जाता है शांति का सागर. तो बच्चों को शांति भी धारण करनी चाहिए.
- शांति के लिए ही बाप समझाते हैं एक-दो से शांति से बोलो.
- बाप ने समझाया है कि मैं शांति का सागर हूँ तो बाप समान बनने के लिए अपने में शांति यहाँ स्थापन करनी हैं.
- बच्चों को अपने में से अशान्ति खत्म करनी हैं. चेक करना है कहा तक हम शांत रहते हैं.
- बहुत पुरुष लोग होते हैं जो शांति पसंद करते हैं. समझाते हैं कि शांत रहना अच्छा है.
- शांति का गुण बहुत भारी दिव्यगुण हैं. जितना शान्त में रहो इतना अच्छा है. शांति से ही बाप को भी याद कर सकते हैं. अशान्ति में नहीं कर सकेंगे.

दैवी-गुण स्वयं में धारण करने के लिए तीन मुख्य बातों का पुरुषार्थ हमें अभी करना हैं.

1. अपने मन-वचन-कर्म से किसी को भी दुख नहीं देना हैं. ऐसे ही किसी को दुखी हो देख कर स्वयं को भी दुखी नहीं बना देना हैं. ना किसी को दुखी करना हैं, ना किसी से दुखी होना हैं.
2. सर्व से गुण-ग्राही बनना हैं. हमारे सामने कैसी भी आत्मा आये, लेकिन स्वयं की स्थिति ऐसी हो हमें उस आत्मा के गुण ही दिखाई दें. अगर मैं ने किसी भी आत्मा का कोई भी अवगुण देखा, तो वह अवगुण हमारे में आ जायेंगे. इसलिए हमें स्वयं की स्थिति ऐसी बनानी हैं की हमें सदा दूसरों में गुण ही दिखाई दें. सर्व के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रखनी हैं.
3. हमारे में जो भी अवगुण हैं, उसको पहचान कर, हर रोज़ उसका चार्ट बनाना हैं और देखना हैं की हमारे में से वह अवगुण दिन-प्रतिदिन कितना कम होता जाता हैं. हर बार कोई एक अवगुण ही निकाल ने की प्रैक्टिस करनी हैं. जैसे बाबा ने आज बताया की हमें स्वयं की माया से सम्भाल करनी हैं, क्योंकि जैसे हम स्वयं से अवगुण निकालने का पुरुषार्थ करते हैं तो माया भी डबल जोर से वार करती हैं. लेकिन हमारे में प्रबल निश्चय हो की कैसे भी करके मुझे ये अवगुण निकालने ही हैं. तो सफलता जरूर हुई पड़ी हैं.

ॐ शांति.